Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **05.05.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह, लंदन।

यह दुनया अमल का घर है, इस दुनया के कर्म अगले जहान में जज़ा या सज़ा का साधन बनेंगे असल चीज़ अल्लाह तआला की रज़ा को हासिल करना है। नेक अमल करो ताकि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले बनो

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

اِعۡلَمُوۡۤا اَنَّمَا الۡحَیٰوۃُ الدُّنۡیَا لَعِبٌ وَّلَہۡوٌ وَّزِیۡنَۃٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَیۡنَکُمۡ وَتَکَاثُرٌ فِی الۡاَمۡوَالِ وَالۡاَوۡلَادِ ؕ کَمَثَلِ غَیۡثٍ اَعۡجَبَ الۡکُفَّارَ نَبَاتُہٗ ثُمَّ یَہِیۡجُ فَتَرٰىہُ مُصۡفَرًّا ثُمَّ یَکُوۡنُ حُطَامًا ؕ وَفِی الۡاٰخِرَۃِ عَذَابٌ شَدِیۡدٌ ۙ وَّمَغۡفِرَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ وَرِضۡوَانٌ ؕ وَمَا الۡحَیٰوۃُ الدُّنۡیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الۡغُرُوۡرِ الحدید:21

इसका अनुवाद यह है कि ऐ लोगो! जान लो कि दुनया की ज़िन्दगी केवल एक खेल है तथा दिल बहलावा है और ज़ीनत हासिल करने और आपस में गर्व करने और एक दूसरे पर माल और औलाद में बड़ाई जताने का माध्यम है। इसकी हालत बादल से पैदा होने वाली खेती के जैसी है जिसका उगना ज़मीनदार को बहुत पसन्द आता है और वह ख़ूब लहलहाती है मगर आख़िर तू उसको पीली होते देखता है फिर इसके बाद वह गला हुआ चूरा हो जाती है और आख़िरत में ऐसे दुनयादारों के लिए सख़्त अज़ाब मुक़र्रर है और कुछ लोगों के लिए अल्लाह की तरफ़ से मग़फ़िरत और रज़ा-ए-इलाही निश्चित है और यह जिन्दगी केवल एक धोखे का फ़ायदा है।

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन-ए-करीम में कई जगह इस तरफ़ ध्यान दिलाया है बल्कि अनुरोध किया है कि इस संसार की ज़ाहिरी ज़िन्दगी और इसकी आसानियाँ, इसकी समृद्धि, इसका माल व सम्पत्ति, ये सारी अस्थाई चीज़ें हैं तथा इनका महत्त्व खेल कूद और दिल के बहलावे के सामान से अधिक कुछ नहीं। अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल और अपनी ज़िन्दगी के मक़सद से ग़ाफ़िल इंसान तो इन चीज़ों और इन बातों की तरफ़ झुक सकता है, जो दुनयादारी की बातें हैं, लेकिन एक मोमिन जिसके सम्मुख उच्च उद्देश्य हैं और होने चाहिएँ, वह इन बातों से बहुत बुलन्द है और बुलन्द होकर सोचता है और उच्च उद्दश्यों को, और अल्लाह तआला की निकटता और उसके प्यार को तलाश करने की कोशिश करता है। हम जो इस ज़माने के इमाम और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार आए हुए मसीह मौऊद और महदी मअहूद की जमाअत में शामिल होने और आपकी बैअत में आने का दावा करते हैं, हमारी सोच निःसन्देह बहुत बुलन्द होनी चाहिए। हम जो अहमदी कहलाते हैं, वास्तविक अहमदी उसी समय बन सकते हैं जब हम अस्थाई तथा दुनया की इच्छाओं और आनन्दों को अपना लक्ष्य न बनाएँ बल्कि दुनया जो आजकल इन आनन्दों में गिरफ़तार है और क़दम क़दम पर शैतान ने अपने ऐसे अड्डे बनाए हुए हैं जो हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं, इनसे पूरी कोशिश करके हमें बचना चाहिए। हमारा मक़सद दुनयावी दौलत की प्राप्ति तथा दुनया के आनन्दों से लाभ उठाना कदापि नहीं होना चाहिए क्यूँकि इन चीज़ों का अंजाम अच्छा नहीं। अल्लाह तआला इन दुनयावी चीज़ों की मिसाल देते हुए फ़रमाता है कि ये फलने फूलने वाली फ़सल की तरह हैं मगर अन्ततः सूखकर चूरा हो जाती हैं और तेज़ हवाएँ इसको उड़ा कर ले जाती हैं। इसी तरह दुनयादारों का अंजाम होता है, न इनके माल व दौलत इनके काम आते हैं, न इनकी औलादें इनके काम आती हैं। कुछ लोग तो इस दुनया में ही माल तथा संतान से महरूम हो जाते हैं और यदि किसी का ज़ाहिरी अंजाम दुनया की दृष्टि से अच्छा लगता भी है तो आख़िरत में इनका हिसाब किताब होना है। याद रखना चाहिए, अल्लाह

तआला यह फ़रमाता है कि यह तुम याद रखो कि इस जीवन को सब कुछ न समझो, असल ज़िन्दगी मरने के बाद की ज़िन्दगी है इस लिए अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए, अंजाम बख़ैर के लिए, अल्लाह तआला से सम्बंध तथा उसके आदेशानुसार चलना ज़रूरी है और इंसान अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने की कोशिश करे, उसके बताए हुए रास्ते पर चले तो न केवल अंजाम बख़ैर होता है बल्कि दुनया भी उसे मिल जाती है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह फ़रमाते हैं कि जो लोग ख़ुदा की तरफ़ से आते हैं, वे दुनया को छोड़ देते हैं तथा इसका अभिप्रायः यह है कि दुनया को अपना उद्देश्य और लक्ष्य नहीं ठहराते। दुनया उनकी ख़ादिम और ग़ुलाम बन जाती है। और फिर फ़रमाते हैं कि जो लोग इसके विरीत इस दुनया को अपना असल लक्ष्य ठहराते हैं, चाहे वे दुनया को कितना ही प्राप्त भी कर लें, अन्ततः अपमानित होते हैं। यह बात जो आपने फ़रमाई यह केवल उस ज़माने की या पुरानी बात नहीं है बल्कि आजकल भी यही होता है। 2008 में जो आर्थिक पतन हुआ उसका प्रभाव अभी चल रहा है। बड़े बड़े व्यापार दिवालिया हो गए यहाँ तक सरकारें भी प्रभावित हुईं। तेल पैदा करने वाले देश समझते थे कि हमारी यह दौलत कभी समाप्त ही नहीं हो सकती, लेकिन हो गई। हुआ क्या उनके साथ, वहाँ भी सरकारों को अपने लागत मूल्य कम करने पड़े, अपने नौकरों को निकालना पड़ा। मुस्लिम देशों का दुर्भाग्य है कि अल्लाह तआला ने उन्हें जो सम्पत्ति प्रदान की उसे वहाँ के बादशाहों और हुकमुरानों और सियासी लीडरों ने बजाए अल्लाह तआला के हुकमों पर चलते हुए उसे अल्लाह तआला की रज़ा का साधन बनाते, अपनी अय्याशियों में लुटाया और लुटा रहे हैं। जिस तेल की दौलत और दूसरी दौलत से इंसान को बचाने और ग़रीब मुसलमान देशों तथा दूसरे देशों को भी अपने पाँव पर खड़ा करने की कोशिश करते, अपने देशों के भूखों और नंगों की भूख और नंग का सामधान करते, उन्होंने इस ओर ध्यान नहीं दिया और अपनी तिजोरियों को भरने में व्यस्त हो गए और अभी तक यही हाल है जिसका नतीजा यह निकल रहा है कि दुनया के सामने भी अपमानित हो रहे हैं, लेकिन समझते नहीं, और उस आख़िरत पर भी नज़र नहीं कर रहे जिसके अज़ाब से अल्लाह तआला ने डराया है, जो सख़्त और ज़लील करने वाला अज़ाब है। तो इस प्रकार इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि दुनया की दौलत चाहे उसका सम्बंध एक आदमी से हो अथवा बड़े बड़े व्यापारी और बड़ी बड़ी व्यापारी कंमपनियों से सम्बंध रखने वाली है या सरकारों का सम्बंध है उससे, उसका ग़लत उपयोग अल्लाह तआला की पकड़ में लाता है। चाहे वह इस दुनया में और अगले जहान में, दोनों जगह अज़ाब दे, चाहे अगले जहान में अज़ाब दे। अतः बड़े ख़ौफ़ का मक़ाम है जो हर एक अक़लमंद इंसान को, एक वास्तविक मुसलमान को, विशेष रूप से उसको जो अल्लाह तआला पर ईमान रखता है, हमेशा अपने सामने रखना चाहिए और केवल ज़ाहिरी तौर पर ही नहीं बल्कि इबादतों और अल्लाह तआला के आदेशों को मानने के लिए एक दर्द और कोशिश होनी चाहिए। कहने वाले तो कह देंगे कि हम तो नमाज़ें भी पढ़ते हैं, इबादतें करते हैं, रोज़े भी रखते हैं। अगर अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं, उनकी प्राप्ति के प्रयास करते हैं तो इसमें क्या बुराई है। ऐसे ही लोगों के बारे में एक जगह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ज़ाहिरी नमाज़ रोज़ा, अगर उसके साथ श्रद्धा और निष्ठा न हो कोई ख़ूबी अपने अन्दर नहीं रखता और ऐसे लोगों की नमाज़ों के बारे में ही अल्लाह तआला फ़रमाता है فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ कि ऐसे नमाज़ियों पर हलाकत हो। और वास्तव में तो अल्लाह तआला ऐसी इबादतें और ऐसे काम हमसे चाहता है जो हमारी रूहानी हालत में बेहतरी पैदा करने वाली हो। दुनया का माल व दौलत और दुनया कमाने से मना नहीं फ़रमाया। अल्लाह तआला ने जो नेअमतें पैदा की हैं, यक़ीनन मोमिनों के लिए जायज़ हैं, किन्तु शर्त यह है कि जायज़ साधन से हासिल की जाएँ और वे दीन के रास्ते में और अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने के रास्ते में रोक न बनें, इबादतों में रोक न बनें।

एक अवसर पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं अपनी उम्मत के बारे में जिस बात को लेकर सबसे ज़्यादा चिंतित हूँ वह यह है कि मेरी उम्मत अभिलाषाओं का अनुसरण करने लग जाएगी तथा सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए लम्बे चौड़े मंसूबे बनाने में लग जाएगी और इन इच्छाओं को पूरा करने के कारण वह हक़ से दूर चली जाएगी। दुनया कमाने की योजनाएँ आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ लोगो! यह दुनया यात्रा के लिए अपना सामान बाँध चुकी है तथा आख़िरत भी आने के लिए तय्यारी पकड़ चुकी है, दोनों तरफ़ से सफ़र शुरु है। अतः यदि तुममें सामर्थ्य हो कि दुनया के बन्दे न बनो तो ज़रूर ऐसा करो। तुम इस समय अमल के घर में हो और अभी हिसाब किताब का समय नहीं आया, मगर कल तुम आख़िरत के घर में होगे और वहाँ कोई अमल नहीं होगा। जो अमल होने हैं, जिनका परिणाम निकलना है वह इसी दुनया में निकलना है इस लिए अपने अमल ठीक करो।

अतः यह दुनया अमल का घर है। इस दुनया के कर्म अगले जहान में जज़ा या सज़ा का साधन बनेंगे। अतः क्या ही ख़ुश क़िसमत हैं हममें से वे जो अल्लाह तआला की इस बात को याद रखें कि यह दुनया केवल खेद कूद है तथा समृद्धि के इज़हार और एक दूसरे पर अपने माल और औलाद के कारण गर्व करना है और इसकी स्थिति किसी सूखे हुए घास फूंस से अधिक नहीं जो ख़ुश्क होता है और चूरा चूरा हो जाता है और हवाएँ उसको उड़ा ले जाती हैं। असल चीज़ अल्लाह तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करना है और यही बात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई है कि नेक अमल करो ताकि अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले बनो।

सहाबा रिज़वानुल्लाहि अलैहिम हर समय अल्लाह की रज़ा और नेक कामों की तलाश में रहते थे। एक बार एक व्यक्ति ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर होकर निवेदन किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा काम बताईए जब मैं उसे करूँ तो अल्लाह तआला मुझसे मुहब्बत करने लगे और अन्य लोग मुझे चाहने लगें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनया से इच्छा रहित और निश्चिंत हो जाओ, अल्लाह तआला तुझसे मुहब्बत करने लगेगा। लोगों के मालों को लालसा की नज़र से न देख, लोग तुझसे मुहब्बत करने लग जाएँगे। दुनया के प्रति इच्छा रहित होना यह नहीं है कि इंसान समाज से कट जाए, संसार से बिल्कुल कट जाए। इस्लाम यह नहीं चाहता, हमारे सामने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुन्दर आचरण है। आपने शादी भी की, आपने बीवियों के हक़ भी अदा फ़रमाए, आपने औलाद के हक़ भी अदा फ़रमाए, आपके पास माल व दौलत भी आया लेकिन आपने इन सारी चीज़ों के बावजूद अल्लाह और बन्दों के हक़ अदा किए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम्हारा मेरी सुन्नत के अनुसार अमल करना भी अनिवार्य है, साधू नहीं बन जाना, दुनया में भी रहना है, इन चीज़ों को सामने भी रखना है, क्यूँकि मैं यही करता रहा हूँ।

अतः हमें समझना चाहिए कि दुनया हमारी इबादतों में आड़े न आए, हमें अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने से न रोके। माल व दौलत की कमाई में व्यस्त होना हमें अल्लाह तआला का हक़ अदा करने से ग़ाफ़िल करने वाला न हो और इसी तरह दूसरे के धन और सम्पत्ति पर लालसा की नज़र नहीं होनी चाहिए क्यूँकि लालसा की नज़र ही है जो फिर दूसरों को भी नुक़सान पहुंचाने की सोच पैदा करती है और दुनया में जो फ़साद है वह भी इसी लालसा के कारण है।

दुनया से अरूचि होने का स्पष्टीकरण स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस प्रकार फ़रमाया कि दुनया के प्रति इच्छा रहित और बन्दगी यह नहीं कि आदमी अपने ऊपर किसी हलाल को हराम कर ले और अपने माल को नष्ट कर दे बल्कि बन्दगी यह है कि तुम्हें अपने माल से ज़्यादा ख़ुदा के इनाम तथा उसके वरदान पर भरोसा हो।

अतः आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमसे, मोमिनों से, अपनी उम्मत के लोगों से ऐसी बन्दगी और अरूचि के स्तर चाहते हैं। अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने बहुत से अहमदियों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की वजह से यह बोध प्रदान किया कि दुनया के नुक़सान उनके लिए कोई महत्त्व नहीं रखते और वे समझते हैं कि ऐसे हालात में अल्लाह तआला की तरफ़ पहले से बढ़कर झुकना चाहिए। अतः हम देखते हैं कि पाकिस्तान में भी तथा कुछ अन्य स्थानों पर भी अहमदियों के लाखों करोड़ों के व्यापार विरोधियों ने नष्ट किए और जलाए लेकिन अल्लाह तआला पर भरोसा करने वाले इन अहमदियों ने न सरकार से गुहार लगाई तथा न किसी और से मांगा, बल्कि अल्लाह पर भरोसा होने के कारण वह हज़ारों और लाखों का कारोबार जो इनका नष्ट हुआ था वह करोड़ों में बदल गया।

अतः ये मिसालें जहाँ अहमदियों के ईमान को मज़बूत करने के लिए हैं, वहाँ समृद्ध देशों में आए हुए अहमदियों के लिए यह एहसास भी पैदा करने वाली होनी चाहिएँ कि हमें माल व दौलत पर दुनयादारों की तरह गिरना नहीं चाहिए। हमें लालसा की नज़रों से दूसरों के माल को नहीं देखना चाहिए बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के अनुसार यदि किसी चीज़ को लालसा की नज़र से देखना है तो दीन की दृष्टि से अपने से ऊपर वालों को हमें देखना चाहिए और देखकर फिर उस जैसा बनने की कोशिश करनी चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि ख़ुदा तआला ने दुनया के कामों को जायज़ रखा है। फ़रमाया- दुनया के कामों को उस हद तक इख़तयार करो कि वह दीन की राह में तुम्हारे लिए मदद का सामान पैदा कर सकें और उद्देश्य उसमें दीन ही हो, अर्थात- दुनया कमाओ, दुनया से फ़ायदा उठाओ, लेकिन हर समय अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और उसक तक़्वा तुम्हारे समाने हो, दीन की शिक्षा तुम्हारे सामने हो। फ़रमाया- अतः हम दुनया के कामों से भी मना नहीं करते और यह भी नहीं कहते कि दिन रात दुनया के धन्धों बखेड़ों में व्यस्त होकर ख़ुदा तआला का ख़ाना

भी दुनया ही से भर दो, अर्थात ख़ुदा याद ही न रहे, इबादत के समय भी दुनया की चीज़ों में लगे रहो। नमाज़ों के समय इन्टर नैट पर व्यस्त हो, फ़िलमें देखने में वयस्त हो अथवा कोई अन्य दुनयावी प्रोग्राम देख रहे हों, यह नहीं। फ़रमाया कि यदि कोई ऐसा करता है तो वह महरूमी का साधन करता है और उसकी ज़बान पर केवल दावा ही रह जाता है। बस दावा है वास्तविकता कुछ नहीं है, ईमान नहीं है। अभिप्रायः यह है कि ज़िन्दों के सम्पर्क में रहो ताकि ज़िन्दा ख़ुदा का जलवा तुमको नज़र आवे।

फिर एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि कोई यह न समझ लेवे कि इंसान दुनया से कोई सम्पर्क और सम्बंध ही न रखे। मोमिन के सम्बंध जितना अधिक दुनया के साथ हों वे उसके उच्च स्तरीय होने का कारण बन जाते हैं।

फिर अज़ाब और जहन्नम का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि समझना चाहिए कि नर्क क्या चीज़ है। एक नर्क तो वह है जिसका मरने के बाद अल्लाह तआला ने वादा दिया है। दूसरा यह जीवन भी यदि ख़ुदा तआला के लिए न हो तो नर्क ही है। फ़रमाया- अम्बिया अलैहिस्सलाम, विशेष रूप से इब्राहीम और याक़ूब अलैहिस्सलाम की यही वसीयत थी कि لا تموتن الا و انتم مسلمون। अर्थात- हर गिज़ न मरो, मगर इस हाल में कि तुम फ़र्माबरदार हो। अब इंसान को तो नहीं पता, न ही इंसान के अपने वश में है मरना और जीना। मतलब यह है कि हर समय अल्लाह तआला के आदेशों पर नज़र हो और आख़िरत की चिंता हो। फ़रमाया। दुनया के आनन्द तो एक प्रकार की नापाक लालसा पैदा करके दुनया की प्यास को और बढ़ा देती है। दुनया के आनन्द क्या हैं, सांसारिक लोभ को बढ़ाने वाले हैं, इस्तिस्क़ा के रोगी की तरह प्यास नहीं बुझती।

अतः ये व्यर्थ की अभिलाषाओं तथा इच्छाओं की आग भी शेष समस्त बातों की तरह उसी नर्क की आग के समान है जो इंसान के दिल को संतुष्टि और राहत नहीं लेने देती बल्कि उसको एक असमंजस एवं व्याकुलता में लिप्त रखती है। इस लिए मेरे दोस्तो की नज़र से यह बात छिपी न रहे कि इंसान माल व दौलत अथवा बीवी बच्चों की मुहब्बत के जोश और नशे में ऐसा दीवाना और मर्ज़ी का मालिक न हो जावे कि उसके और ख़ुदा के बीच एक प्रकार का पर्दा आ जाए।

अतः हमें इन देशों की समृद्धि और आराम ख़ुदा तआला की इबादत से ग़ाफ़िल करने वाले न हों, उसके हक़ अदा करने से वंचित करने वाले कभी न हों। हमारे अच्छे हालात, हमारे अच्छे आर्थिक हालात जो हैं, हमें अपने कमज़ोर आर्थिक स्थिति रखने वाले भाईयों के हक़ अदा करने से वंचित करने वाले कभी न हों। इसी तरह इस्लाम के प्रसार तथा इस्लाम की तबलीग़ में भी हम अपनी भूमिका निभाने वाले हों, न कि इस उद्देश्य को भूल जाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का उद्देश्य यही है कि अल्लाह तआला के भी हक़ अदा किए जाएँ और बन्दों के भी हक़ अदा किए जाएँ तथा तबलीग़ का जो हक़ है उसको पूरा किया जाए। इसी से दीन को दुनया पर मुक़द्दम करने का लक्ष्य हम पूरा कर सकते हैं। अल्लाह तआला करे कि हम हमेशा अल्लाह तआला की रज़ा की तलाश में रहें और इस दुनया की धोखे वाली ज़िन्दगी कभी हम पर हावी न हो। हम इस दुनया के जहन्नम से भी बचने वाले हों और आख़िरत के नर्क से भी बचने वाले हों। अल्लाह तआला का फ़ज़्ल और उसकी रज़ा हमारे लिए इस दुनया को भी जन्नत बना दे और आख़िरत में भी हम जन्नत हासिल करने वाले हों।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अभी नमाज़ के बाद मैं दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊँगा। एक जनाज़ा मुकर्रम बशारत अहमद साहब इब्ने मुकर्रम मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब, ख़ानपुर ज़िला रहीम यार खाँ का है जिनको 3 मई को शहीद कर दिया गया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

दूसरा जनाज़ा प्रोफ़ैसर ताहिरा प्रवीन मलिक साहिबा का है जो मलिक मुहम्मद अब्दुल्लाह साहब मरहूम की बेटी थीं। पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रोफ़ैसर थीं। 17 अप्रैल को यूनिवर्सिटी के एक नौकर ने चाक़ू से वार करके शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हुज़ूर-ए-अनवर ने हर दो मरहूमों के सतगुण बयान फ़रमाए और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ने का ऐलान फ़रमाया।

Toll Free-180030102131